कविता-संग्रह

दस्तक

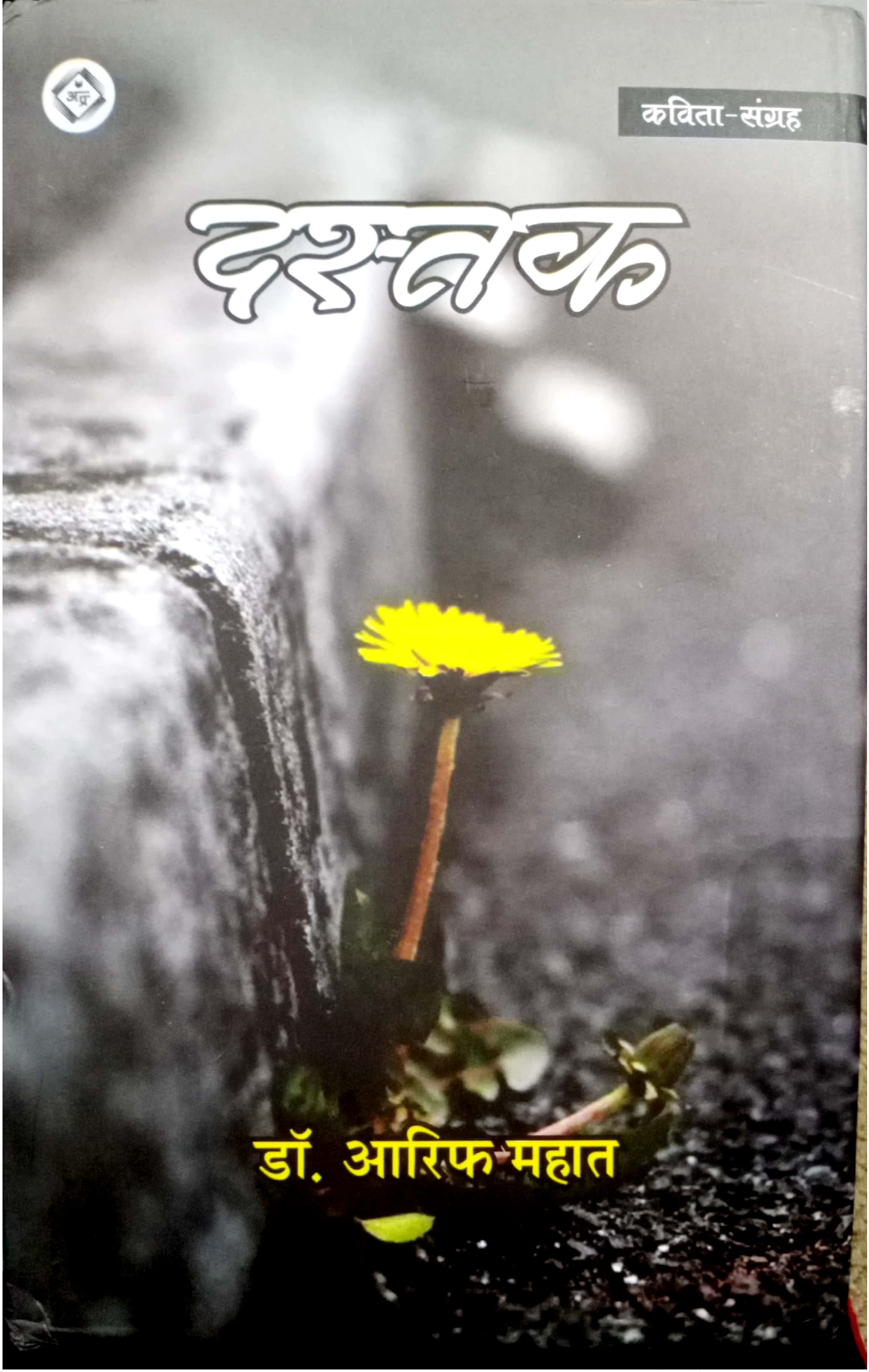

डॉ. आरिफ महात

Scanned with CamScanner

दस्तक

(कविता-संग्रह)

डॉ. आरिफ महात

अमन प्रकाशन
कानपुर

Scanned with CamScanner

नोट : इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। कवि एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

I.S.B.N. : 978-93-89220-55-1

पुस्तक : दस्तक (कविता-संग्रह)
कवि : डॉ. आरिफ महात
संस्करण : प्रथम, सन् 2019
सर्वाधिकार : डॉ. आरिफ महात
मूल्य : ₹ 225.00 मात्र
प्रकाशक : अमन प्रकाशन
104-A/80 C रामबाग, कानपुर-208 012 (उ. प्र.)
मो. : 09839218516, 08090453647
फोन नं. : 0512 - 2543480
मुद्रक : साक्षी ऑफसेट, यशोदा नगर, कानपुर
शब्द सज्जा : अम्बुज ग्राफिक्स, आर.के. नगर, कानपुर

DASTAK (Kavita-Sangrah)
by – *Dr. Aarif Mahat*
Price : Rs.Two Hundred Twenty Five Only

Scanned with CamScanner

गिरगिट....

गिरगिट तुम बड़ी भूल कर बैठे
रंग बदलने के
अपने हुनर को
बचा न सके
इतने मूर्ख...
कैसे बने रहे
कि कॉपीराइट भी न करा सके

तुम्हारे इस हुनर के गुर को
अब इन्सान ने
आत्मसात कर लिया है
इसकी माहिरी में
वो दो कदम तुझसे
आगे निकल चुका है

अब तो तुम किसी को
ये यकीन भी न दिला सकोगे
कि ये हुनर तुम्हारा है

सच में...
गिरगिट तुम बड़ी भूल कर बैठे

●

कुर्सी

ये कुर्सी.....
जब तुझ पर कोई
आम या खास
बैठ जाता है
आराम पाता है
उसकी फितरत में
कोई बदलाव नहीं आता

पर, जब तुमसे.....
कोई ओहदा चिपकता है
फिर चाहे तुझ पर
आम बैठे या खास
उसकी फितरत बदल जाती है

ऐसा क्यों ?
बतलाओगे.....

अहंकार उसका
गहना बन जाता है
उसकी दृष्टि हमेशा
औरों में कमी ढूँढती रहती है
औरों के सवाल
इसे चुभते रहते हैं
हर पल इसे अपनी
श्रेष्ठता दिखानी रहती है

ये हर दम अपनी
दुनिया में खोया रहता है
ऐसा क्यों ?
बतलाओगे.....

ओहदा पा.....
सत्ता पा.....
सब कुछ पा....
ये नीलकंठ नहीं
विषैला बन जाता है

ऐसा क्यों ?
उलझन है ये.....
सुलझाओगे
ऐसा क्यों ?
बतलाओगे.....

Scanned with CamScanner

दरबारी

बोलने की है पाबंदी
खाने की है पाबंदी
फिर भी....
कहते हो है आजादी
वाह रे वाह दरबारी
तेरी हर बात न्यारी

जो करे तेरी वाहवाही
उसकी हर बात भारी
करे जो सच की पैरवी
उसकी त्राही, त्राही, त्राही
वाह रे वाह दरबारी
तेरी हर बात न्यारी

गरीबों के पेट है खाली
अमीरों की झोली में
नहीं जगह बाकी
फिर भी तेरी मेहरबानी में
है उसी की हिस्सेदारी
वाह रे वाह दरबारी
तेरी हर बात न्यारी

तुझे जो लगे बात प्यारी
वही है सबको माननी
भाड़ में जाए जनता सारी

Scanned with CamScanner

चले यहाँ सिर्फ तेरी मनमानी
फिर भी तू कहे मैं हूँ त्यागी
वाह रे वाह दरबारी
तेरी हर बात न्यारी

राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रद्रोही
बदलते इसके मायने
तेरे मनमर्जी स े।
सहमें हुए री हर
डरे हुए हैं सब
लिये चेहरे पर खुशहाली
फिर भी तू कहे
न्याय की है भूमिका हमारी
वाह रे वाह दरबारी
तेरी हर बात न्यारी

●

अभागे हो....

अनशन पर हो
भूखे प्यासे हो
महिनों.....
अपनी चुनी हुई सरकार से
अपनी जायज़ बातों के लिए
जवाब तलब कर रहे हो ?

कोई नहीं आ रहा ना
सुनने....
जवाब देने...
किसी के कानों पर
जूँ तक नहीं रेंग रही ना...

महिनों कमर तक पानी में हो
पैर सड़ रहे हैं
अपने ही मूत्र को पीने के लिए
विवश हो...

चाहते हो
लोकतंत्र का चौथा स्तंभ
तुम्हारा आधार बने
सुर्खिया बन जाए
सोया देश जाग जाए

Scanned with CamScanner

लेकिन...
ये होगा कैसे ?
तुम भारत के नागरिक जो ठेहरे

सुर्खिया बनती
अगर तुम...
इंडिया के नागरिक होते
सुबह से शाम तक
तुम्हारी हर हरकत को
कैमरे पकड़ते...
तुम्हारे आगे पीछे दौड़ते
तुम क्या...?
तुम्हारे कुत्तों की नस्लों की चर्चा होती
उसके बिस्कुट के ब्रांड की चर्चा होती
और तो और
खैर...
(मैंने अभी भाषाई तमीज नहीं खोई)

हाँ भाई...
खबरे तुम्हारी भी बनती
अगर तुम...
सेलिब्रेटी होते
नशे में चूर
घात या आत्मघात कर बैठते

खबरे बनती...
जब तुम
घोटाले कर भाग जाते
तब तुम्हारे जीवन चरित्र को
स-विस्तार दिखाया जाता

हाँ, खबरे बनती भाई...
जब तुम कोई कांड करते
लेकिन...
तुम ये सब नहीं कर सकते
खास वाले कोई गुण तुम में नहीं

तुम तो आम नागरिक हो
हाँ, वहीं आम नागरिक
जो पाँच सालों में एक बार
ठप्पा लगाता है

तुम अभागे हो
भारत के नागरिक हो
हाँ, वही भारत
जिसकी दुहाई देकर
सभी सत्ता में आ जाते हैं
और फिर
इंडिया 'शायनिंग' करने में
जुट जाते हैं

•

Scanned with CamScanner

बापूजी...

बापूजी आपके विचारों को
सिर्फ पढ़ा नहीं मैंने
बल्कि,
आत्मसात कर लिया है
इसलिए... शायद
इस व्यवस्था में
पलते हुए
हर रोज
आपके साथ
थोड़ा थोड़ा
मैं भी मर रहा हूँ

आये दिन
एक ख्वाब मुझे
परेशान कर रहा है

ख्वाब में
देखता हूँ मैं
आपके तस्वीर के
पीछे से
अनगिनत नंगी तलवारें
बंदूकें...
बम...
झाँक रहे हैं
और खून के कतरे
बहे जा रहे हैं

हड़बड़ी में
उठ जाता हूँ मैं
पसीना पसीना हो जाता हूँ मैं
फिर पानी के दो घूँट पी
पूरी रात...
कमरे के चक्कर
काटता रहता हूँ मैं

इधर कुछ दिनों से
लोग पूछ रहे हैं
पहले बड़े हट्टेकट्टे थे
अब दुबले हुए जा रहे हो
कुछ लेते क्यों नहीं?
क्या कोई रोग लगा है?

मैं मुस्कुरा भर देता हूँ
और आगे बढ़ता हूँ...

●

Scanned with CamScanner

आईने की बात को झुठलाते हो...

ईमान बेच कर ईमान की बात करते हो
हर बार नया ढोंग तुम रचाते हो

फितरत से तुम्हारी यहाँ कौन नावाकिफ है
जाल बिछाकर अक्सर नादान बनते हो

महकती खुश्बूओं का मायाजाल फैलाकर
मनचाही बात तुम मनवाते हो

नन्हें कंधों पर अनचाहा बोझ लादकर
उनकी मासूमियत से खिलवाड़ करते हो

अपने बड़प्पन की बात कर यूँ ना तारिफे बटोर
आईने की बात को अक्सर तुम झुठलाते हो

●

कदम सम्हलकर रखिए...

बेलगाम ख्वाहिशों पर कुछ तो लगाम कसिए
फिसलन है, कदम जरा सम्हलकर रखिए

ये जो बेवजह ताकती रहती हैं
अपनी नजरों को हया का सबक सिखलाइए

खुला आसमाँ है, चाहे जितना फैल जाइए
डोर कहीं और है, इतना याद रखिए

सिर्फ अपनी बात कर महफिल ना छोडिए
यूँ ना मचलिए, थोड़ा तो सबर कीजिए

सितारा बनने की ख्वाहिश सभी की है जहाँ में
कभी किसी का आसमाँ बनकर देखिए

●

Scanned with CamScanner

कल इतिहास सराहेगा...

बिगड़े हुए हैं हालात, लड़ना मत छोड़ो
पाबंदी है, पर बोलना मत छोड़ो

ये तुम्हारे जिंदा होने की अलामत है
दूसरों को देख, आवाज उठाना मत छोड़ो

दहशत है आम, सहमें हुए हैं सब
इस माहौल को जगाना मत छोड़ो

तुम अकेले हो तो क्या हुआ सफर में
संभावनाओं की डोर को पकड़ना मत छोड़ो

जो सच्चे हैं, वो जुड़ जाएँगे राहों में
उम्मीद की लौ को जलाना मत छोड़ो

कल इतिहास सराहेगा तुम्हारे इस कदम को
लड़खड़ाते कदम आगे बढ़ाना मत छोड़ो

●

सफदर....तेरे बहाने

सफदर ....
तुमसे मेरी पहचान
मेरे छात्र ने कराई
घटना बड़ी दिलचस्प थी

लाइब्रेरी में
किताबों को पलटते हुए
एक किताब में
तेरे नाम का जिक्र आया
जैसे ही तुम्हारा नाम सुना
छात्र उत्साहित हो
किताब को लपककर
तुम्हारा नाम लेता रहा
लगातार....

उसकी उत्सुकता
मुझे पूछने के लिए
मजबूर कर गई की
कौन है ये....
सफदर हाशमी ?

उसने मुझ पर कटाक्ष डालते हुए
पूछा, सर....
आप, सफदर को नहीं जानते ?

Scanned with CamScanner

वो लगातार
आप.....
नहीं.....
पर जोर देता रहा

सच कहता हूँ सफदर
उसका वो नहीं शब्द
मुझे अंदर तक चीरता गया

वैसे .... सफदर
इस व्यवस्था में पलते हुए
कागजी घोड़े दौड़ाते-दौड़ाते
कब अध्यापक से क्लर्क बन गए
पता नहीं चला

इधर मैं अपने सहयोगियों से कहता हूँ
कि मेरे अंदर का पाठक,
श्रोता....
धीरे-धीरे मर रहा है
तो वो कहते हैं....
हमारा तो कब का मर चुका है
अब तो उसके लाश को
हम ढो रहे हैं
ताकि लोगों का गुमान बना रहे

ना.... ना.....
तुम ऐसा मत समझना सफदर
कि मैं नकारात्मकता से भरा हुआ हूँ
क्योंकि .... व्यवस्था
हमेशा से ऐसी ही थी,
है और रहेगी

लेकिन तुम्हारे समय
इस व्यवस्था के प्रति विरोध था
सिर्फ विरोध नहीं
निस्वार्थ विरोध....
ये 'निस्वार्थ' शब्द
बड़े मायने रखता है
क्योंकि ये वही शब्द है
जो मरे हुए में जान फूँक देता है
आज भी विरोध है
मगर 'निस्वार्थ' शब्द मर चुका है

सफदर व्यवस्था के खिलाफ
तुम भी लड़े...
लेकिन तुम खास इसलिए हो
क्योंकि विरोध को तुमने
कला के माध्यम से प्रस्तुत किया
और जनता से कटी हुई कला को
तुम फिर से जनता के बीच ले गये

सफदर ....
विरोध को तुम्हारे समय में भी
कुचला गया
उस समय
इसको कुचलने के
दो तरीके थे
पहला विरोधियों को पालतू बनाओ
या दूसरा मार डालो....
लेकिन आज
विरोध को कुचलने का
तीसरा तरीका भी ईजाद हुआ है

Scanned with CamScanner

इसमें....
विरोधियों को अधमरा बनाने में
पूरी व्यवस्था लगा दी जाती है
और फिर उसे
बेबस, लाचार बनाकर छोड़ दिया जाता है
वो फिर से न उभरे
इसलिए तथाकथित गिद्धों को
छोड़ दिया जाता है
उसे हर पल नोचते रहने के लिए

सफदर अगर तुम इस समय होते
तो इसके विरोध को
किस कला में ढालते
देखना दिलचस्प होता

सफदर .....
तुम्हारी सबसे बड़ी खासियत
ये है कि
तुम मर चुके हो
फिर भी जिन्दा हो
और हम जिन्दा हैं
फिर भी.....

शब्द

जुबान है मेरे पास
और इससे निकलने वाले
शब्द भी हैं .....
बड़े बेमिसाल

लेकिन, जाने क्या बात है
इधर कुछ दिनों से
ये अपने पूरे वजूद के साथ
बाहर आने से कतरा रहे हैं

इन दिनों .....
अंदर की बेचैनी
कुछ ज्यादा ही बढ़ गई है

क्या करें
इन शब्दों के छूटे टुकड़े
अंदर बड़े परेशान कर रहे हैं

शायद ! ये डर रहे हैं
बाहर आने से

बाहर घात-प्रतिघात का
माहौल जो बना हुआ है
लेकिन मुझे मालूम है

Scanned with CamScanner

मैं इन्हें ज्यादा दिनों तक
अंदर रख नहीं पाऊंगा

ये बाहर आएँगे
पूरी शिद्दत के साथ आएँगे
और जरूर आएँगे

चुभता हुआ सवाल

दाहिनी ओर से
लिख रहा था कुछ
बच्चा नादान
इनाम में मिला उसे
एक करारा तमाचा
और चुभता हुआ सवाल
क्या तू है मुसलमान ?

ये बीज
बोया जाता है
हमारी उपजाऊ
सरजमीं पर

वक्त के चलते
मिलती रहती है
इसे खाद

ये बढ़ जाता है
तन के खड़ा हो जाता है

किसी को फल
किसी को छांव
किसी को बसेरा
देने के लिए नहीं
अपने रोयेंदार काँटे
चुभाने के लिए...
लहुलुहान करने के लिए...

Scanned with CamScanner

फिर बढ़ जाती है
एक खाई
कभी न मिटनेवाली
चक्की के दो पाटों के बीच
फसे हुए अनाज की तरह

हम कसमसाते रहते हैं
पिसते रहते हैं
मगर...
हमारी तकलीफ
समझता कौन है

यहाँ मसलने वाले भी
हम
और मसले जाने वाले भी
हम

वक्त की रौ के साथ
नफरत की ये आंधी
बह रही है निरंतर....
सदियां बीत गई
पर अब तक है ये तरोताजा

शक और डर
इसके दो हथियार
जो काट रहे हैं
जड़े इन्सानियत
और हम तमाशबीन
देख रहे हैं तमाशा
और....
ले रहे हैं मजा

●

दस्तक

हर पहर दस्तक देती है तन्हाई
मेरे सूने घर के दर पर
उम्मीदों के साथ पहुँचता हूँ
हो मायूस लौट आता हूँ

अरमानों के बनती बिगड़ती दास्तां को
चंद लम्हों में जी लेता हूँ

निढाल हो
कुर्सी पर फैल जाता हूँ
कश्मकश में खोया रहता हूँ

कभी लगता
बिस्तर की सिलवटों से
खुश्बू है उमड़ रही

तो कभी
ताकता रहता
घर की सूनी दीवारों को
जहाँ कभी यादें कैद थी

भर आए एहसास के
समंदर की चंद बूँदों को
आँखों के किनारे से

Scanned with CamScanner

अपनी उंगलियों में समेटता हूँ
चुपके से उन्हें
हाथों पर मलता हूँ

तभी सीने में
एक हूक-सी उठती है
संग अपने
दर्द का सैलाब लाती है

फिर तभी
अचानक.....
मेरे सूने घर के दर पर
कोई दस्तक है सुनाई देती

●

क्योंकि.... औरत हूँ

दिल के घावों को मैंने
ढक दिया है
पैबंद लगाकर

अगर...
ये कहीं से भी खुल जाए
तो पुरुष सत्ताक समाज की
सारी गंदगी बाहर आ जाए

क्या करूँ...?
मजबूर हूँ
इस दर्द को
सहने के लिए निरंतर...
बेइलाज...
क्योंकि....
मैं औरत हूँ

या तो देवीसम पूजनीय हूँ
या फिर दासी हूँ
इसलिए मूँह बंद
दर्द सहने की आदी हूँ

मैं ही दूर्गा, मैं ही काली हूँ
मैं ही सरस्वती, लक्ष्मी हूँ
तो कभी दामिनी

Scanned with CamScanner

कभी तेजस्विनी हूँ
लेकिन...
हर जगह
मैं ही प्रताड़ित हूँ

कभी माँ, कभी बहन
कभी बेटी, कभी पत्नी
ये सभी रूप मेरे ही हैं
फिर भी औरत हूँ
इसलिए....
हर घूरती आँखों की
शिकार मैं ही हूँ

मुझे दर्द देने के लिए
अनगिनत रास्तों की खोज की गई है
कितनों को मैं बंद करूँ
एक बंद करूँ
तो दूसरा खुले
पहले से ज्यादा भयानक
और खतरनाक....

इसलिए,
फिर मैं चाहे पाँच की रहूँ
या पचास की
हर भूखे कुत्ते का निवाला
मैं ही हूँ

क्योंकि....?
मैं औरत हूँ

चक्का जाम

बड़े महानगर में
एक कद्दावर नेता की
मौत हो गई
पूर्णतया नैसर्गिक

देखते ही देखते
ये खबर
आग की तरह
पूरे देश में फैल गई

सभी कार्यकर्ता
हरकत में आ गए
कुछ अति उत्साही
मोटर बाईक के
हुजूम के साथ
शहर में फैल गए

एक चौराहे पर
कुछ दुकाने
अधखुली थी
एक दुकान पर
एक औरत गमगीन बैठी थी
अभी-अभी उसने
ये दुकान
रेंट पर चलाने ली थी

Scanned with CamScanner

कुछ दिन पहले ही
उसके पति की
मौत हो चुकी थी
दो बच्चों का भार
उस पर था

अति उत्साही
कार्यकर्ताओं में से
कुछ ने भद्दा इशारा कर
उसे दुकान बंद करने को कहा

उनमें से एक
उसके बेटे की उमर का था
भारी दिल से उसने
दुकान का शटर डाऊन किया
सोचा....
दुकान तो बंद रहेगी
लेकिन क्या....?
उसका रेंट भी.....

उसके चेहरे पर
परेशानी की घटा उमड़ पड़ी
दो दिन तक
शहर की दुकाने बंद रही

अब वह औरत
उस नेता के कारण
घुट-घुट कर जीती रहेगी...

शहर के इस हाल पर
एक मासूम ने
इसके सही-गलत होने पर
ट्विट किया

अति उत्साही कार्यकर्ताओं ने
इसके लिए
उस मासूम को
उस के घर वालों को
दंडित किया
उसके मकान को
खंडहर बना दिया

और तो और
इसके कारण
कानून उल्लंघन के तहत
उसे गिरफ्तार कर लिया गया

वह मासूम
दुनियादारी से अनजान
फफक-फफक कर रो पड़ी
अपनी सही करनी के लिए
हर एक से माफी मांगने लगी

सच में....
तभी
इस देश का हर आदमकद
बौना हुआ नजर आया

अब ये ख़बर है फैल रही कि

Scanned with CamScanner

कद्दावर नेता का
स्मारक बनाया जाएगा
बहुत जल्द
बन भी जाएगा

फिर...
कभी कोई मनचला
कुंठित मानसिकता वाला
उस स्मारक से
छेड़खानी करेगा
और...
देखते ही देखते
फिर से
सारे देश में
चक्का जाम होगा

●

जोगी बगुला

पहन जोगी का चोला
खड़ा रहा बगुला ध्यानमग्न
पानी की सतह पर

बहोत समय बीत गया
वो वैसा ही खड़ा रहा
मासुमियत उसके चेहरे से
टपकती रही.....
वो ध्यानमग्न खड़ा रहा

देखते ही देखते
भक्तगणों का हुजूम उमड़ पड़ा
उसके पैरों छू बढ़ने लगा
वो ध्यानमग्न खड़ा रहा

मनचाहे शिकार की तलाश में
और जैसे ही मनचाहा शिकार आया
पलक झपकते ही लपक लिया
चोंच में दबोच लिया

थोड़ी देर के लिए कोलाहल मचा
पानी में तरंगे उठी
देखते ही देखते भक्त को
बगुले ने निगल लिया

और चोंच को साफ करते हुए
फिर से खड़ा रहा ध्यानमग्न
अगले शिकार की तलाश में

●

Scanned with CamScanner

बिजुका

चौथी सत्ता को अपनी पहचान खोते देखा हमने
हरकत वाले इस प्राणी को बिजुका बनते देखा हमने

गुलाम लब लिए चिल्ला-चिल्लाकर ये पुकार रहे
आम जन को अक्सर इसके लपेट में आते देखा हमने

खास जन की महफिलें आज भी गुलजार बनी हुई है
इन्हीं महफिलों में अक्सर इन्हें तालियाँ बजाते देखा हमने

तुम भूखे, नंगे, प्यासे हो तो क्या हुआ
अक्सर तुम्हारी आवाज को इन्हें दबाते देखा हमने

इनके जानिब से, तुम खुशहाल थे, हो और रहोगे
इन्हें अक्सर जम्हूरियत के पैबदों को छुपाते देखा हमने

ऊँगली पकड़ तुम्हारी गले तक पहुँचने में देर नहीं लगती इन्हें
ये वहीं हैं, जिन्हें सत्ता के आगे दुम हिलाते देखा हमने

राहत की साँस मत लो, जम्हूरियत के खेतों में इन्हें स्थापित देख
ये वहीं हैं, जिनके सर भक्षकों को गंध फैलाते देखा हमने

●

Scanned with CamScanner

मारे जाने का खतरा

आजकल बड़ी घुटन महसूस हो रही है
खुली हवा में साँस लेते हुए

मैं दमे का मरीज नहीं हूँ
ना ही मुझे दिल की बिमारी है
ना फेफड़ों का कोई रोग है

डॉक्टरों ने मर्ज जानने के लिए
जाँच की, जो पेहरिस्त दी थी
वो करवाने के बाद
पता चला.....
कि मेरे अंदर
'ईमानदारी' के कीड़े
कुछ ज्यादा ही बढ़ गए हैं

इस मिलावटी आबोहवा में
बौखलाए हुए वो
परेशान कर रहे हैं

डॉक्टरों का मानना है कि
मेरी रोग प्रतिकार शक्ति
(मतलब अंदरूनी ताकत)
कमजोर हो गई है

गहरी जाँच के बाद पता चला
इसमें संविधान पर
भरोसा रखने वाले
सिम्टम्स हैं
जो इसे कमजोर बनाए जा रहे हैं

(याद रहे, यही सिम्टम्स पहले
रोग प्रतिकार शक्ति को बढ़ाते थे)

विशेषज्ञों ने ये चेताया है कि
जब तक मैं
इस लत को नहीं छोड़ूँगा
स्वस्थ नहीं हो पाऊँगा
लेकिन... मैं क्या करूँ
इसका मैं आदी बन गया हूँ

ठीक वैसे ही
जैसे,
शराबी शराब का
जुआरी जुए का
नशेबाज नशे का आदी होता है

मेरी वाली लत को
छुड़वाने के सेंटर भी आजकल
जगह-जगह खुले हैं

घरवालों ने मुझे बारी-बारी
इनमें भर्ती भी करवाया
लेकिन...मैं वहाँ से भाग आता हूँ
उक्ता जाता हूँ वहाँ

अब तो विशेषज्ञों ने
स्पष्ट संकेत दिए हैं
कि अगर मैं
इस लत से
पीछा नहीं छुड़वाता
तो मारे जाने का खतरा है
पर किससे....
ये नहीं बताया

●

Scanned with CamScanner

डॉ. आरिफ महात

जन्म : 1 जुलाई, 1980

जन्मस्थान : कोल्हापुर

शिक्षा : एम.ए. (गोल्ड मेडल) नेट, पीएच.डी. (हिंदी)।

रचनाएँ : दिल की बात (काव्य-संग्रह), जागो हुआ सवेरा (काव्य-संग्रह), मीडिया हिंदी और पत्रकारिता (संपादित), हिंदी दलित आत्मकथाएँ (संपादित), शानी का साहित्य : विविध आयाम (शोध ग्रंथ), प्रतीक्षा (कहानी-संग्रह), तूफानों में जलते दिए (ग़ज़ल संग्रह)।

पुरस्कार : कुलपति स्वर्ण पदक - शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर (महाराष्ट्र), महाकवि भूषण हिंदी अकादमी पुरस्कार, डॉ. चन्दू लाल दुबे परितोषिक, डॉ. आर. व्ही. चितणीस पुरस्कार आदि सभी शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर (महाराष्ट्र) द्वारा सम्मानित।

संप्रति : सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)।

संपर्क : 1029, डी वार्ड, शनिवार पेठ, कोल्हापुर - 416002 (महाराष्ट्र)।

मोबाइल : 9860857089

ईमेल : drmahatas@gmail.com

अप्र

अमन प्रकाशन

104-ए/80 सी, रामबाग, कानपुर-208012 (उ.प्र.)
मोबाइल नं. : 8090453647, 9839218516
फोन : 0512-2543480
ईमेल : amanprakashanknp@gmail.com
वेबसाइट : www.amanprakashan.com

₹ 225/-

ISBN : 978-93-89220-55-1

कविता-संग्रह

Scanned with CamScanner